अनामिका की काव्य भाषा : स्त्री भाषा के संदर्भ में

पूजा कुमारी गुप्ता
शोधार्थी, गुजरात यूनिवर्सिटी

सारांश

अनामिका की काव्य भाषा में सहजता, सरलता, प्रवाह मयता का उल्लेख सहज ही मिल जाता है। उनकी काव्य भाषा का लचीलापन उनकी कविताओं में बहुत ही आसानी से देखने को मिलता है। वह अपनी कविता में लयबद्धता, बिंब, प्रतीक, तत्सम, तद्भव तथा देशज शब्दों के माध्यम से काव्य भाषा को समृद्ध किया है। अनामिका की कविता में बदलते परिवेश, टूटते मूल्य और विखंडित होते संयुक्त परिवार, अकेलेपन का संत्रास, स्त्री - पुरुष संबंध में आयी शिथिलता को लेखिका ने अपनी कविता में बखूबी चित्रण किया है। अनामिका की कविता के कैनवास के केंद्र में स्त्री अपने अनेक रूप और रंग में विद्यमान है। महानगर और जनपद, बुद्धिजीवी और श्रमजीवी बालक और वृद्ध, परिवार और समाज तक उसकी संवेदना का विस्तार है। उपेक्षित मानवीयता और उसकी विवशता भी उनकी कविताओं में प्रकट होती है।

बीज शब्द : स्त्री अस्मिता, पुरुष सत्तामकता, स्त्री भाषा, भाषा शैली, मातृ सत्तात्मकता, स्त्री – पुरुष संबंध।

प्रस्तावना

कविता मानव मन की अभिव्यक्ति का माध्यम है। हिंदी साहित्य की विधा में कविता सबसे सशक्त विधा के रूप में विकसित होती है। आज कविता के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में सर्वाधिक है। प्रत्येक आधुनिक भाषा में कविता लिखी, पढ़ी व समझी जा रही है। यही कारण है कि पत्र- पत्रिकाएं कविताओं से समृद्ध दिखाई देती हैं। 1850 ई. से हिंदी काव्य जगत में जो आशातीत प्रगति हुई है वह उत्साहवर्धक है। यह सत्य है कि हिंदी कविता अमीर खुसरो, विद्यापति, कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, भूषण, मीरा, मतिराम, पद्माकर आदि के कर- कमलों में सुशोभित हुई है। किंतु आधुनिक काल में भी भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा इत्यादि कविता की श्री वृद्धि करते हैं। परंतु जैसे-जैसे कविता का विकास होता है, वैसे-वैसे कविता अपने नए रूप में ढलती चली जाती है। छंद बद्ध कविताओं की तरफ से आधुनिक कवियों का मोह भंग दिखाई देने लगता है। यही कारण है कि सबसे पहले छंद मुक्त कविता “जूही की कली” लिखी जाती है। उसके बाद मुक्तक छंद में कविता करने वालों की बाढ़ – सी आ जाती है। अनामिका की कविता शैली भी मुक्तक छंद की ही है। जीवन के सहज प्रसंगों से भाव ग्रहण करती है। “लोक में स्त्री” उनकी कविता का चिंतन है। इतिहास के प्रचलित प्रसंगों से वह विषय जरूर लेती हैं लेकिन घर आंगन के मध्य उसकी समीक्षा करती हैं। आर्थिक आधार पर वह स्त्री की उपस्थिति को विश्लेषित नहीं करती बल्कि मनुष्यता का बोध वे आवश्यक मानती हैं। 21वीं सदी में कविता की अपनी भूमिका परिवर्तित होती है और भूमिका परिवर्तन के अनेक कारण थे। जिनमें भौतिकता, उत्पादन, औद्योगिक क्रांति, आधुनिकता, औपनिवेशिकता, हिंसा, तनाव, अकेलापन, मूल्यों का क्षरण आदि ऐसे अनेक विषय थे। जिसकी कसौटी पर बार-बार उसे कसा गया। फलस्वरूप उसने अपनी उपस्थिति को कविता के माध्यम से पुरुषवादी, अहंवादी, मर्दवादी, सत्ता के सम्मुख स्वर दिया। उसने अपनी भाषा, बिंब, लय का निर्माण किया। शोषण के पुरुषवादी व्याख्या को उसने पारिस्थितिकी व्याख्या से समझाने की कोशिश की। अमानवीयता, क्रूरता, शोषण के कारण मातृशक्ति के क्षरण के खिलाफ 21वीं सदी की स्त्री कविता करते हुए उठ खड़ी होती है। उसकी कविता वैचारिक संघर्ष, सामाजिक जिम्मेदारी

के बोझ और लैंगिक राजनीति के शोषण के विरुद्ध उठ खड़ी हुई है। आज की स्त्री कविता सिर्फ अपनी बात नहीं करती अर्थात् विभिन्न अस्मिताओं के संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

मूल आलेख –

अनामिका का जन्म 17 अगस्त 1961 को बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ। पढ़ने – लिखने की परंपरा बचपन से ही इनके अंदर विद्यमान थी। पिता बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति रहे तथा माता भी सुशिक्षित थीं। अनामिका अपनी कविताओं में बीच-बीच में शब्दों से खेलती नजर आती हैं। वह गपशप शैली अपनाती हैं और दादी की कहानियों की तरह भूमिका बनाती नजर आती हैं। यह सब बातें वह अपनी कविता में स्त्री शैली के माध्यम से करती हैं। इसके सौंदर्य को पुरुषों के प्रतिमान पर नहीं आकां जा सकता। इसके लिए स्त्रियों के जीवन और रहन-सहन शैली को परखना होगा। तभी स्त्री के भाषा की खूबसूरती समझ में आएगी। अनामिका की एक कविता में जेठ की दुपहरी का चित्रण है। मगर इसकी विशेषता यह है कि सभी बिम्ब सारे उपमान स्त्री के सक्रिय जीवन से लिए गए हैं। अनामिका हिंदी की ऐसी पहली कवयित्री है जिन्होंने अपने विषय से आगे बढ़कर भाषा, शिल्प, सौंदर्य और आस्वाद के स्तर पर अपनी काव्य भाषा को एक नया आयाम दिया है। स्त्री का अपना धरातल इसके लिए उन्हें लंबा संघर्ष करना पड़ा। क्योंकि विषय से हटकर उसमें बदलाव तो आसान होता है मगर सौंदर्य बोध और आस्वाद को बदलना बहुत कठिन और इसे काव्य जगत के धरातल पर स्वीकृति दिलाना उससे भी ज्यादा कठिन होता है।

आधुनिक काल का हिंदी काव्य साहित्य पिछली सदी में विकास के अनेक पड़ावों से गुजर। जिसमें अनेक विचार धाराओं का बहुत तेजी से विकास हुआ। जहां काव्य में इसे छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, नई कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता इन नाम से जाना गया। इस समकालीन समय में कवयित्री अनामिका ने अपने काव्य भाषा को एक नए आयाम के रूप में पाठक वर्ग के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

अनामिका ने अपने काव्य भाषा के संसार में स्त्री अस्मिता की भी चर्चा की है। जो समकालीन स्त्री कविता में स्त्री अस्मिता की चेतना को जागृत करते करता है। वह अनायास नहीं है बल्कि उसके पीछे स्त्री अस्मिता से संबंधित चिंतन और आंदोलन की ताकत हमें दिखाई देती है। यदि हम स्त्री अस्मिता के स्वरूप को समझने का प्रयत्न करें तो अस्मिता का तात्पर्य है कि मैं हूँ अर्थात् मेरा भी अस्तित्व है। कोई मनुष्य जब अन्य से अलग हटकर स्वयं के स्वर की पहचान करता है तो वहां से अस्मिता का बोध आरंभ होता है। फलतः अस्मिता स्वयं की पहचान है। स्त्री अस्मिता अनामिका ने अपने काव्य जगत में भरपूर मात्रा में पाठक वर्ग के सम्मुख रखा है। स्त्री अस्मिता के संदर्भ में डॉक्टर रूपा सिंह अपना मतव्य प्रस्तुत करते हुए लिखती हैं –

“अस्मिता की अवधारणा, आधुनिकता के साथ आने वाली वह अवधारणा है जिसका अर्थ है- ‘स्व’ की पहचान, अपने होने का बोध। लिंग, जाति, रिश्ते, नाते, समाज, धर्म, देश, राष्ट्र, बोली तथा व्यवसाय आदि के आधार पर मानव अपनी अस्मिता की पहचान करता है।” (१)

अनामिका समकालीन हिंदी काव्य जगत की सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी काव्य भाषा सहजता का बोध कराती है। सादगी पूर्ण भाषा में स्त्री-विषयक चरित्र को वह नया आयाम देती हैं। उधार के चिंतन से विमर्श का आशीर्वाद उनका लक्ष्य नहीं है। लेखिका अपने काव्य भाषा में स्त्रियों की तरफ से आवाज उठाती हैं। सुगमता से समझाने के लिए अनामिका नौकरी से पहले विज्ञापन की तरह ध्यान से पढ़ने और समझने वाली दृष्टि को आवश्यक मानती हैं। इनका मानना है कि ‘अनहद’ का नाद जैसे संपूर्ण दिगंत में व्याप्त है, इसी नाद की तरह स्त्रियों के होने की संपूर्णता को सुना जाए। नई सीखी हुई भाषा जैसे हमसे बेहद ध्यान से उसे सुनने की आग्रह करती है। ठीक उसी तरह उन्हें भी सुना और समझा जाए। अनामिका अपने काव्य भाषा में स्त्री लेखन और उसके माध्यम से स्त्री जीवन के संघर्ष को समझने

के लिए नए दृष्टिकोण का विस्तार करती हैं। उनके काव्य जगत में वह उस ओर भी इशारा करना नहीं भूलती जहां महिलाएं अपनी उपस्थिति की प्रतिस्थापना में दूसरे के समझ कनखी, इशारे और कनखी से विशेषीकृत को प्रस्तुत करती हैं। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियां मर्दवादी व्याख्या से ऊबी हुई है। अनामिका स्त्री चिंतन के परिदृश्य को समझने की नई भाषा, नई दृष्टि का आगाज करती हैं। उसे “डेकोरम” में लाना चाहती हैं।

अनामिका अपनी कविताओं में परमपिता और परमपुरुष के से आजादी देने का जो आग्रह है वह वास्तव में पितृसत्ता के उस परमपिता और परमपुरुषों से आग्रह है जो ऑनर कीलिंग, बलात्कार, तानाशाही, फांसी, जलाना, एसिड से हमला करना अपना परमकर्तव्य मानते हैं ऐसे पुरुष को अनामिका अपनी कविताओं में बड़े ही बेहतरीन ढंग से प्रस्तुत करने में पीछे नहीं रहती हैं। अपनी इसी अवधारणा के तहत अनामिका उन उपादानों की पहचान करती हैं। जो स्त्री को सदियों से गुलाम बने हुए है। वह उस पूरे आधारभूत पितृसत्तात्मक ढांचे को अपनी कविता में अपनी जगह से गिरकर

“कहीं के नहीं रहते,

केश, औरतें और नाखून

अन्वय करते थे किसी श्लोक का ऐसे

हमारे संस्कृत टीचर।

और मारे डर के जम जाती थीं

हम लड़कियां

अपनी जगह पर!” (२)

अनावृत्त करने का प्रयत्न करती हैं जिसके भीतर स्त्री एक स्वतंत्र जैविक इकाई होने से वंचित हो जाती है –

स्त्री- अस्मिता और स्त्री- स्वतंत्रता की बात करने वाली स्त्रियों को कई बार हमारे समाज का बुद्धिजीवी वर्ग भी अपनी जड़ संस्कारबद्धता के कारण संवेदनशीलता के साथ स्वीकार नहीं कर पाता। अनामिका के काव्य में उपस्थित स्त्री अस्मिता की इस स्थिति को भी उजागर करता है –

“ इतना सुना था कि अधर में लटकती हुई

एक अदृश्य टहनी से

टिड्डियां उड़ी और रंगीन अफवाहें

चीखती हुई ची – ची

.....

हे परम पिताओं

परम पुरुषों –

बक्शों, बख्शों, अब हमें बक्शों।” (३)

अनामिका अपनी कविताओं में पुरुष वर्चस्व को तोड़ने का रचनात्मक प्रयास करती हैं। वह पुरुष समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता में सेंध लगाती हैं –

“कितने बरस अभी और रहेंगे आप
इसी पांचवी कक्षा के बालक की मनोदशा में-
लगातार मुझे काटते – छांटते ,
गोदी में मेरी
नन्ही इकाइयां बिठाकर
वही लंगडी भिन्न बनाते-
तीन होल नंबर, फलां बटा फलां?
कब तक बंटना , कब तक छटना –
देखिए मुझे अपने अंतिम दशमलव तक,
फिर कहिए, क्या मैं बहुत भिन्न हूं आपसे ?”(४)

हमारे पारिवारिक- सामाजिक ढांचे में स्त्री भेदभाव का शिकार होती रही है। हमारे समाज में पुरुष और स्त्री के लिए भिन्न प्रतिमान रहे हैं। जबकि स्त्री का स्वाभाविक विकास तभी संभव है जब पुरुषों के समान उन्हें भी आत्मीयता और स्वतंत्रता मिले। किंतु वह पक्षपात का शिकार होती रही है। इस भेदभाव को अनामिका की कविता पहचानती है और उसे उजागर करती है-

“जगह-जगह क्या होती है
यह, वैसे, जान लिया था हमने,
अपनी पहली कक्षा में ही !
याद है हमें एक-एक अक्षर
आरंभिक पाठों का
राम, पाठशाला जा!
राधा, खाना पका !
राम, आ बताशा खा!
राधा, झाड़ू लगा
...
राम, देख यह तेरा कैमरा है !

‘ और मेरा ?’

‘ ओ पगली, ‘

लड़कियां हवा, धूप मिट्टी होती है

उनका कोई घर नहीं होता !” (५)

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से अनामिका समाज और परिवार में बचपन से ही भेदभाव के शिकार स्त्री जीवन का चित्र उपस्थित कर देती हैं। इस भेदभाव के कारण स्त्री का सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र विकास संभव नहीं हो पाता और उसकी स्थिति एक गुलाम की तरह हो जाती है।

अनामिका की कविता नई सदी के नए विमर्श की कविता है। उनके काव्य जगत में भाषा पर अपनी एक मजबूत पकड़ है। एक स्त्री पूरी सृष्टि को घर के कोने से दूर अक्षांश तक को कैसे देखती है। यह अनामिका की कविता को पढ़ते हुए समझा जा सकता है। भाषा की वह पौध जिसे लक्ष्मण बूटी कहते हैं वह इनके पास है। लेखिका ने अपनी कविता के विषय संपूर्ण गोलार्ध को समेटे हुए हैं। वैश्विकता के साथ निजता का समन्वय अनामिका की काव्य भाषा में विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है। इनकी कविता चुटपुटिया बटन की तरह है जो चट से लगकर पट से बंद हो जाती है।

‘ बदलते वक्त के साथ बदलती गई तस्वीर जमाने की ‘ यह पंक्तियां इस कविता पर एकदम सटीक बैठती हैं। अपने स्त्री जीवन के भीतर के भयावह सच को बहुत सहज ढंग से काव्य अनुभूति में परिवर्तित कर एक नए रूप में, एक नए अर्थ में, आग्रह भरे स्वर में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

अनामिका की कविताओं में स्त्री- पुरुष विरोधी मानसिकता का उल्लेख मिलता है। पितृसत्तात्मक मानसिक ढांचे में बंधा पुरुष कभी भी स्त्री की अस्मिता को स्वीकार नहीं कर पाया।

बहुत पहले से अनामिका कविता को कम शब्दों में अधिक कहने की विधा मानती हैं। विगत तीन- चार दशकों के चिंतन और कला साहित्य को देखने से यह पता चलता है कि उसमें स्त्री – अस्मिता संबंधी विमर्श का तीव्र उभरा हुआ है। स्त्री – अस्मिता के संदर्भ में गरिमा श्रीवास्तव लिखती हैं-

“ आज चिंतन के तौर पर स्त्री- विमर्श अपनी संपूर्ण रचनात्मकता के साथ युग – परिवर्तन की भूमिका में उपस्थित है। कला, साहित्य, मनोविज्ञान, संस्कृति सभी क्षेत्रों में स्त्री- विमर्श के विविध आयामों को देखा जा सकता है। स्त्री द्वारा रचित पाठ, स्त्री भाषा ने न सिर्फ पितृसत्तात्मक भाव और मूल्य में संध लगाई है। बल्कि स्त्री की दृष्टि से देखें- सुने- गुने जीवन को पाठकों तक पहुंचाकर पाठकीय रुचि को भी परिष्कृत किया है।” (६)

हिंदी साहित्य में स्त्री विषय के अनुरूप हो या विषयी के अनुरूप हो, उसका एक लंबा इतिहास रहा है। पिछली शताब्दी पर दृष्टि डालें तो जहां तक प्रागैतिहासिक भारतीय समाज में नारी की स्थिति का सवाल है वैदिक साहित्य में व्यक्त हुई ऐसी कई बातों से इसका अनुमान लगाया जा सकता है। जो एक और मातृ सत्तात्मक समाज में नारियों की विकसित और गौरवमयी स्थिति का परिचय कराती हैं। वहीं दूसरी ओर तत्कालीन सामाजिक संबंधों में नारियों की भूमिका के क्रमशः गौण होते संबंधों को भी दर्शाती हैं। "मनुस्मृति" इसका साक्षात् प्रमाण है। वैदिक वाङ्मय में सर्वाधिक प्राचीन और सर्वाधिक महत्वपूर्ण ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 2006 मंत्रों में से मात्र तीन मंत्रों (दो लोपामुद्रा द्वारा और एक मात्र ऋचा रोमशा द्वारा) का नारियों द्वारा रचित होना और उसमें भी सेक्स को ही वर्ण विषय बनाना उस काल में नारियों की दयनीय दशा का स्वतः परिचय देता है।

निष्कर्ष -

अनामिका की काव्य भाषा में सहजता, सरलता, प्रवाह मयता का उल्लेख सहज ही मिल जाता है। उनकी काव्य भाषा का लचीलापन उनकी कविताओं में बहुत ही आसानी से देखने को मिलता है। वह अपनी कविता में लयबद्धता, बिंब, प्रतीक, तत्सम, तद्भव तथा देशज शब्दों के माध्यम से काव्य भाषा को समृद्ध किया है। अनामिका की कविता में बदलते परिवेश, टूटते मूल्य और विखंडित होते संयुक्त परिवार, अकेलेपन का संत्रास, स्त्री - पुरुष संबंध में आयी शिथिलता को लेखिका ने अपनी कविता में बखूबी चित्रण किया है। अनामिका की कविता के कैनवास के केंद्र में स्त्री अपने अनेक रूप और रंग में विद्यमान है। महानगर और जनपद, बुद्धिजीवी और श्रमजीवी बालक और वृद्ध, परिवार और समाज तक उसकी संवेदना का विस्तार है। उपेक्षित मानवीयता और उसकी विवशता भी उनकी कविताओं में प्रकट होती है। अनामिका की विशिष्टता यही है कि वह खुली आंखों से सामाजिक दृश्यों का सामना करती हैं, लेकिन वह दृश्य उनके निजी आभ्यंतर संदर्भ में डालकर आते हैं। जिस अर्थ में ' व्यक्तिगत ही राजनीतिक ' होता है, उसी अर्थ में अनामिका का काव्य जगत ' व्यक्तिगत ही सामाजिक ' है। यह एक संयोग नहीं परिघटना है। उनकी कविताएं समाज में स्त्री दशा का साक्षात्कार कराती हैं। वे सामाजिक सत्य का आभास भी कराती हैं और कवयित्री के व्यक्तिगत सत्य का एहसास भी कराती हैं।

संदर्भ सूची :-

१. स्त्री अस्मिता और कृष्णा सोबती - डॉ. रूपा सिंह, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- पृष्ठ संख्या - १७
२. कहती हैं औरतें - अनामिका, पृष्ठ संख्या - १५२
३. वही - पृष्ठ संख्या- १६६
४. वही - पृष्ठ संख्या- १५७- १५८
५. कहती हैं औरतें - अनामिका, पृष्ठ संख्या - १५२
६. बहुवचन (पत्रिका अंक- २४), जनवरी - मार्च - २०१०, गरिमा श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या- १२४